Result Mitra Daily Magazine

तुलसी विवाह एवं तुलसी पौधा का महत्व

❖ चर्चा में क्यों ?

- "तुलसी विवाह" जो इस वर्ष 12 नवंबर को मनाया जा रहा है, एक प्रमुख हिंदू त्यौहार है।
- तुलसी विवाह प्रत्येक वर्ष कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी (11वां दिन) को मनाया जाता है, जिसे देवउठनी एकादशी के नाम से भी जाना जाता है।
- तुलसी विवाह औपचारिक रूप से हिंदू धर्म में विवाह के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है।

❖ तुलसी विवाह क्या है ?

- तुलसी विवाह में पवित्र तुलसी के पौधे (ओसिमम सैक्टम) और भगवान विष्णु का रूप माने जाने वाले काले पत्थर "शालिग्राम" के विवाह का जश्न के रूप में मनाया जाता है।
- हिंदू धर्म के पौराणिक कथा के अनुसार ऐसा माना जाता है कि "तुलसी" पिछले जन्म में कालनेमी नामक राक्षसी (असुर) की बेटी वृंदा के रूप में थी।
- वृंदा का विवाह जलंधर नामक राक्षस से हुआ था।
- जलंधर 'जल' से उत्पन्न हुआ था, इसलिए उनका नाम जलंधर रखा गया, जो अत्यंत शक्तिशाली था।
- वृंदा एक धार्मिक एवं पतिव्रता महिला थी, जिसकी भक्ति उसके पति जलंधर के लिए ढाल के रूप में काम करती थी।
- जलंधर को भगवान ब्रह्मा से यह वरदान प्राप्त था कि जब तक उसकी पत्नी यानि वृंदा उसके प्रति वफादार रहेगी, तब तक उसको कोई भी पराजित नहीं कर सकता।
- ब्रह्मा जी के इस वरदान का लाभ उठाकर जलंधर ने दुनिया भर में विजय प्राप्त करना शुरू किया।

- जलंधर के इस विजयी अभियान से देवतागण चिंतित हो गए एवं उन्होंने इसके समाधान के लिए भगवान विष्णु की मदद मांगी।
- 'पद्म पुराण' के अनुसार भगवान विष्णु को यह एहसास हुआ कि जब तक जलंधर की पत्नी वृंदा की उसके पति के प्रति निष्ठा को खत्म नहीं किया जाता, तब तक जलंधर का खात्मा नहीं हो सकता।
- इसी क्रम में भगवान विष्णु जलंधर का रूप बनाकर वृंदा के पास गए एवं वृंदा ने जलंधर रूपी भगवान विष्णु को अपना पति जलंधर समझ कर उन्हें गले लगा लिया जिससे वृंदा की पवित्रता भंग हो गई।
- जब वृंदा को भगवान विष्णु द्वारा किए गए इस छल के बारे में पता चला तो उन्होंने भगवान विष्णु को काले पत्थर में बदल जाने का श्राप दे दिया, जिसे भगवान विष्णु ने स्वीकार कर लिया।
- भगवान विष्णु ने वृंदा के दिए गए श्राप को स्वीकार करते हुए वृंदा को तुलसी के पौधे में बदल जाने को कहा जिससे वे विवाह करेंगे।
- इस प्रकार कार्तिक शुक्ल पक्ष के एकादशी को भगवान विष्णु अपनी चार महीने की निद्रा से जागते हैं एवं तुलसी से विवाह करते हैं।
- हिंदू धर्म में जिस चार महीने (चतुर्मास) भगवान विष्णु निद्रा में रहते हैं, उस अवधि में शुभ गतिविधियां निलंबित रहती है एवं इस तुलसी विवाह के बाद सभी शुभ गतिविधियां शुरू हो जाती है एवं शादी का मौसम शुरू हो जाता है।
- ऐसा माना जाता है कि तुलसी के पौधे की सुगंध वास्तव में वृंदा की पवित्रता और भक्ति की सुगंध है।

❖ शालिग्राम पत्थर क्या है ?

- शालिग्राम नेपाल की गंडक नदी में पाया जाने वाला एक काला पत्थर है।
- प्रसिद्ध मानवविज्ञानी होली वाल्टर्स के अनुसार शालिग्राम पत्थर "अम्मोनाइट" का जीवाश्म है।
- अम्मोनाइट एक प्रकार का मोलस्क है, जो लगभग 400 मिलियन से 65 मिलियन वर्ष पहले रहता था।
- 1904 के भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के लेख के अनुसार, शालिग्राम पत्थर 165–140 मिलियन वर्ष पहले जुरासिक काल के अंत के करीब प्रारंभिक ऑक्सफोर्डियन से लेकर लेट टिथोनियन युग का है।
- ऐसा माना जाता है कि शालिग्राम पत्थर पर पाए जाने वाला गोल धागे की तरह उजला निशान भगवान विष्णु के चक्र का निशान है।

Result Mitra

- हिंदू धर्म में प्रत्येक देवताओं की मूर्ति को स्थापित करने के लिए शालिग्राम पत्थर में प्राण प्रतिष्ठा करने की आवश्यकता होती है।
- नर्मदा नदी से प्राप्त शालिग्राम पत्थर की प्राण प्रतिष्ठा की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि वे अपने भीतर दिव्यता के साथ ही उत्पन्न होते हैं।

❖ तुलसी पौधा :

- तुलसी (ओसिमम सेक्टम) पौधा एक द्विबीजपत्री तथा शाकीय औषधीय पौधा है।
- भारतीय हिंदू संस्कृति के पुरातन वेद ग्रंथों में तुलसी पौधे के गुणों एवं उपयोगिता का वर्णन मिलता है।
- तुलसी पौधे का उपयोग एलोपैथी, होम्योपैथी और यूनानी दवाओं में किसी न किसी रूप में किया जाता है।

❖ तुलसी पौधे की प्रजातियां :

- तुलसी पौधे की सामान्यतः 7 प्रजातियां हैं :–

1. ऑसीमम सेक्टम
2. ऑसीमम वेसिलिकम (मरुआ तुलसी)
3. ऑसीमम वेसिलिकम मिनिमम
4. ऑसीमम ब्रेटिसिकम (राम तुलसी/वन तुलसी)
5. ऑसीमम किलिमंडचेरिकम (कर्पूर तुलसी)
6. ऑसीमम अमेरिकम (काली तुलसी)
7. ऑसीमम विरीडी

❖ तुलसी पौधे की रासायनिक संरचना :

- तुलसी का पौधा विभिन्न जैव सक्रिय रसायन का संयोजन से बना है, जिन पर ट्रैनिन, सैवोनिन, ग्लाइकोसाइड और एल्केलाइड्स प्रमुख है।
- तुलसी पौधे के पत्ते के रस में 71% यूजीनॉल, 20% यूजीनॉल मिथाइल ईथर तथा 3% कार्बाकोल पाया जाता है।
- तुलसी पौधे के बीजों में सीटोस्टेर, वसा अम्ल (पामिटिक, स्टीयरिक, ओलिक, लिनोलक और लिनोनिक अम्ल) पाए जाते हैं।

TM Result Mitra

❖ नर्मदा नदी :

- नर्मदा नदी जिसे स्थानीय रूप में रेवा नदी के नाम से जाना जाता है, पश्चिम दिशा में बहने वाली भारत की पांचवीं सबसे लंबी नदी है।
- नर्मदा नदी मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले के अमरकंटक पठार से निकलती है एवं महाराष्ट्र एवं गुजरात राज्य में बहते हुए गुजरात के भरूच से 30 km पश्चिम में खंभात की खाड़ी में गिरती है।
- खंभात की खाड़ी अरब सागर की एक खाड़ी है।
- इसकी कुल लंबाई 1312 km है।

मत बढ़ाने का मौका

TM

Result Mitra